

## दुसरा लीस ढुषुडलररुस सलरुडतुत डुररु डरुसुडु?

इसुलरुडरु सडुडुतरु नरु अडुनरु सुषुडुकरुतरु करु सरुथ अरुरुषुडरु वुडवरुहरु करुडरु हरु अरुरु सुषुडुकरुतरु अरुरु उसकी सुषुडु करु डुडु करु सडुडुडु करु सरुडु डुगुहरु डुरु ररुखरु हरु। डुडुकरु अरुनुडु डरुनुडु सडुडुतरुअरुं नरु अलुलुलरुहरु करु सरुथ अरुरुषुडरु डरुडुडु नरुडुडु करुडरु हरु। उरुनुडुंनरु उसकरु इरुकरु करुडरु हरु, ईडरुनु अरुं इडरुडरुत डुं डुसरु डुररुणुडुं करु उसकरु सरुथ सरुडुडी डुनरुडरु हरु अरुरु उसरु अरुसरु सुथरुनु डुरु ररुखरु हरु, डुु उसकी शरुनु अरुं सरुडुथरुडुं करु अरुनुरुडु नरुडुडु हरु।

अरु सरुरुडु डुरुसलडरुनु सडुडुतरु अरुं सडुसुकुरुतु करु डुडु डुडुशुरण नरुडुडु करुडरु हरु। वरुह वुडुकरुं अरुरु वुडुशुनुं सरु डुडील करुनरु करु तरुडुकरु करु नुडुधरुडरुत करुनरु अरुं उनकरु डुडु अरुंतरु करुनरु डुं डुडु करु ररुसुतरु रुनुतरु हरु।

सरुसुकुरुतुकरु तरुतुव : वुडुशुवरुस सडुडुडु, वरुडुकरुडु तथरु डुडुधुकरु डरुतरुं अरुरु वुडुवरुहरुकरु अरुरु नरुडुतुकरु डुडुलुडुं करु डुरुतुनुडुधुतुव करुडरु हरु।

सडुडुतरु सडुडुडु तरुतुव : डुह वरुडुशुनुनुकरु उडुलडुडुडुं, डुडुतुकरु सुडुडुं अरुरु अरुडुगुडुकरु अरुवुषुकरुं करु डुरुतुनुडुधुतुव करुडरु हरु।

डुरुसलडरुनु इन वुडुशुनुं अरुरु अरुवुषुकरुं करु अडुनरु ईडरुनु अरुरु वुडुवरुहरु सडुडुडु अरुवधरुणरुअरुं करु डरुडुरु डुं ररुहतरु हुअरु अडुनरुतरु हरु।

गुरुडुकरु सडुसुकुरुतु अलुलुलरुहरु करु अरुसुतुतुव डुरु ईडरुनु लरुई, लरुकरुनु उसनरु उसकरु अरु डुडुं सरु इरुकरु करुडरु अरुरु उसकरु डरुडु डुं डुतरुडरु करु वरुह न लरुडु डुहुंरुडु सरुकरुतु हरु अरुरु न हरुनु करुडरु हरु।

रुडुडुनु सडुसुकुरुतु नरु अरुडु डुं सुषुडुकरुतरु करु इरुकरु करुडरु अरुरु ईसरुई धरुडु अडुनरुनु करु डरुडु सुषुडुकरुतरु करु सरुडुडी ठुहरुडरु। रुनुनुनु उसकी डरुनुडुतरुअरुं डुं डुतुडुरुसुतुी करु तरुतुव, डुसरु डुतुं अरुं शकुतुशरुलुी वसुतुअरुं की इडरुडरुत अरुडु रुडुडुं डुरुवरुश करुडुी गुरुई।

इसुलरुडु सरु डुहलरु डुररुसुी सडुसुकुरुतु नरु अलुलुलरुहरु करु इरुकरु करुडरु, उसकरु रुडुडु डुरुरुडु की इडरुडरुतु की, अरुग करु सरुडुडरु करुडरु अरुं उसकरु डुवुतुरु डुनु।

हरुनुडु सडुसुकुरुतु नरु सुषुडुकरुतरु की इडरुडरुतु रुडुडुकरु सुषुडु की डुुडु शुरु करु डुी, डुु डुवुतुरु तुरुडु करु डुहधरुण करुडुी हरु, डुु तुरुनु डुवुीडु रुरुडुं सरु डुलकरु डुनरु हरु : डुगवरुनु "डुरुहुडु" सुषुडुकरुतरु करु रुरुडु डुं, डुगवरुनु "वुषुणु" ररुकुकरु करु रुरुडु डुं अरुरु डुगवरुनु "शुवु" वुधुवुंसकरु करु रुरुडु डुं।

डुडुधु सडुडुतरु नरु सडुसरु की ररुनु करुनरु वरुलरु करु नकरुरु अरुरु डुडुधु करु अडुनरु डुवतुडु डुनरु लुडरु।

सरुडुडुं नरु, डुु अरुहुलरु कुरुतुडु डुं सरु थरु, अडुनरु ररुडु करु इनकरु करुडरु। उनकरु कुरुषु डुरुसुतुलडु अरुकरुशुवरुवरुडुी गुरुडुडुं -डुनुनुकरु कुरुअरुनु नरु उलुलरुसु करुडरु हरु- करु रुडुडुकरु सरुडुी नरु डुरुडुं अरुरु सरुतुरुडुं की डुुडु की।

अरुखरुनुतरुनु करु शरुसनकरुल करु डुरुरुनु डुरुरुनुनुकरु सडुडुतरु अरुकरुशुवरुवरुडु अरुं डुुडुडु की डुवुतुरुतरु करु उरुरु

स्तर पर पहुँची, मगर उसमें भी पूज्य के भौतिक शरीर होने का दावा करने एवं उसे उसी के कुछ प्राणियों, जैसे सूर्य आदि का सदृश बनाने जैसी बातें पाई जाती थीं, जिन्हें पूज्य के प्रतीक माना जाता था। अल्लाह का इंकार उस समय शिखर पर पहुँच गया, जब मूसा -अलैहिस्सलाम- के समय में फिरऔन ने अल्लाह के अतिरिक्त पूज्य होने का दावा किया और अपने आपको पहला क़ानून साज़ घोषित कर दिया।

अरब सभ्यता ने सृष्टिकर्ता की इबादत को छोड़कर बुतों की इबादत शुरू कर दी।

ईसाई सभ्यता ने अल्लाह के पूर्ण रूप से एक होने का इंकार किया, उसके साथ ईसा मसीह एवं उनकी माँ मरयम को साज़ी ठहराया और ट्रिनिटी की आस्था को अपनाया। अर्थात् इस बात पर ईमान रखा कि अल्लाह तीन-तीन सत्ताओं में है (बाप, बेटा और पवित्र रूह)।

यहूदी सभ्यता ने अपने सृष्टिकर्ता का इंकार किया और अपने लिए एक विशेष पूज्य को चुना, जिसे उसने अपनी जाति का माबूद बनाया, बछड़े की इबादत की और अपनी किताबों में माबूद को मानव विशेषताओं से विशेषित किया, जो उसके योग्य नहीं हैं।

पिछली सभ्यताएं कमज़ोर हुईं और यहूदी एवं ईसाई सभ्यताएं दो गैर-धार्मिक सभ्यताओं में बदल गईं। अर्थात् पूजीवाद और साम्यवाद। यदि अल्लाह तथा जीवन के बारे में उनकी धारणाओं और विचारों पर गौर किया जाए तो स्पष्ट होगा कि वे नागरिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति में शिखर पर पहुँचे हुए होने के बावजूद पिछड़े, अविकसित, क्रूर और अनैतिक हैं। दरअसल नागरिक, वैज्ञानिक और औद्योगिक प्रगति सभ्यताओं के विकसित होने का मानक नहीं है।

सही सभ्यतागत प्रगति की कसौटी इसका तर्कसंगत प्रमाणों और अल्लाह, मनुष्य, ब्रह्मांड और जीवन के संबंध में सही विचार पर आधारित होना है। सही और उन्नत सभ्यता वह है जो अल्लाह और उसके प्राणियों के साथ उसके संबंध, इनसान के अस्तित्व के स्रोत, उसके परिणाम के ज्ञान के बारे में सही अवधारणाओं की ओर ले जाती है और इस संबंध को सही स्थान पर रखती है। इस तरह हम पाते हैं कि इस्लामी सभ्यता सभी सभ्यताओं के बीच अकेली विकसित सभ्यता है। क्योंकि इसने ज़रूरी संतुलन को बाकी रखा है। पुस्तक "इसाअह अल-रसमालिय्यह व अल-शुयूईय्यह इला अल्लाह", प्रो. डॉ. गाजी इनाया।

📞 011-26101010

🌐 [www.alnajat.org](http://www.alnajat.org)

📧 [info@alnajat.org](mailto:info@alnajat.org)

🕒 15:00 2026 06:41:55